2 बचपन (कृष्णा सोबती)

लेखिका-परिचय

कृष्णा सोबती का जन्म .... इनकी गणना नई हिंदी कहानी की महत्वपूर्ण महिला रचनाकारों में होती है। इन्होंने मुख्य रूप से महिलाओं से जुड़े मुद्दों पर कहानियाँ लिखी हैं। उन्होंने सभी वर्गों की महिलाओं की स्थिति- चाहे वे घर में रहने वाली हों, मजदूरी करती हों या फिर कामकाजी हों- का चित्रण किया है। डार से बिछुड़ी, मित्रों मरजानी, यारों के यार, तिन पहाड़, बादलों के घेरे में, सूरजमुखी अंधेरे के, जिंदगीनामा, ऐ लड़की, दिलो दानिश, हम हशमत, समय सरगम और शब्दों के आलोक में, उनकी महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। वे अब भी लेखन कार्य में संलग्न हैं।

पाठ का सार

'बचपन' (संस्मरण) कृष्णा सोबती द्वारा लिखा गया है। वे अपने बचपन की यादों को बहुत ही रोचक ढंग से प्रस्तुत करते हुए अपनी बातें सरवर को कहती हैं। लेखिका कहती हैं कि इस संस्मरण से मैं तुम्हें अपने बचपन की ओर ले जाऊँगी। हालांकि अभी मैं तुम्हारी नानी, दादी जैसी हूँ। अब तो मैं बहुत सयानी हो गई हूँ क्योंकि मैं पिछली शताब्दी की हूँ। समय के साथ मेरे पहनने-ओढ़ने में भी बदलाव आते रहे हैं। पहले गहरे रंग पसंद करती थी तो अब सफ़ेद या हल्के रंग। हर प्रकार के कपड़े—फ्रॉक, निकर-वॉकर, स्कर्ट, लहँगे, गरारे और अब चूड़ीदार और घेरदार कुर्ते पहने हैं। बचपन के कुछ फ्रॉक और उनके डिज़ाइन तो अभी तक याद हैं। इसके साथ मोज़े स्वयं धोती थी, नौकर से धुलवाने की सख्त मनाही थी। इतवार को ये सब काम करती थी। बूट पॉलिश करना बड़ा अच्छा लगता था। उस समय जूते ऐसे बढ़िया नहीं होते थे, बस नए जूते मिलते ही छालों का इलाज शुरू हो जाता था। आज का ज़माना बदल चुका है। हर शनिवार को हमें सेहत के लिए ऑलिव ऑयल या कैस्टर ऑयल पीना पड़ता था। जिसे देखते ही उल्टी आने लगती थी। आज सोचती हूँ कि न भी पीती तो सेहत पर ज्यादा असर पड़ने वाला नहीं था। उन दिनों कुछ घरों में ग्रामोफ़ोन थे पर रेड़ियो और टेलीविज़न नहीं थे। उन दिनों की कुलफ़ी ही आज की आइसक्रीम हो गई है। कचौड़ी-समोसा पैटीज़ में बदल गया है। शहतूत और फ़ाल्से और खसखस के शरबत कोक-पेप्सी में बदल गए हैं। हम माल रोड के पास ही रहते थे। बाज़ार से ब्रैड लाने की ड्यूटी लगती थी। हफ़्ते में एक चॉकलेट खरीदने की छूट थी जिसे रात के खाने के बाद बिस्तर पर लेटकर खाती थी। शिमला के काफ़ल, रसभरी, कसमल, चना ज़ोर गरम और अनारदाने का चूर्ण, बचपन के वे मज़े भुलाए नहीं भूलते। खूब घुड़सवारी करने का मौका मिला। शिमला की पहाड़ियों का प्राकृतिक सौंदर्य अद्भुत था। चर्च की घंटियाँ बजतीं तो दूर-दूर तक उनकी गूँज फैल जाती थी। सूर्यास्त का दृश्य तो मन को लुभाने वाला होता था। शिमला-कालका ट्रेन के छोटे-छोटे डिब्बे और उन पर दौड़ती ट्रेन। हमारी सदी में तो वही तेज़ दौड़ने वाली ट्रेन होती थी। दिल्ली में कभी-कभी जहाज़ देखने को मिलता था। सब बच्चे आवाज़ सुनकर देखने दौड़ते थे। वहाँ पर गाड़ी के मॉडल वाली दुकान के साथ एक और ऐसी दुकान थी, जिस पर मेरा पहला चश्मा बना था। आँखों का डॉक्टर अंग्रेज था। शुरू में तो चश्मा लगाना बड़ा ही अटपटा लगा, फिर आदत-सी पड़ गई। चचेरे भाई मुझे छेड़ते— 'सूरत बनी लंगूर की'। इसके बाद तो चश्मे की ऐसी आदत पड़ गई कि बिना चश्मे के खाली-खाली सा लगता। वैसे मुझे शिमला में सिर पर टोपी लगाना पसंद है। कहाँ दुपट्टों का ओढ़ना और कहाँ सहज सहल सुभीते वाली हिमाचली टोपियाँ। बस यही दिन जो अब लेखिका की यादें बन गए हैं।

शब्दार्थ : उम्र = आयु (age)। **सयाना** = समझदार (wise)। **शताब्दी** = सदी (century)। **बदलाव** = परिवर्तन (change)। **दशक** = दस साल (decade)। **फ्रिल** = झालर (frill)। **लैमन कलर** = हल्का पीला (lemon colour, light yellow)। **शनीचर** = शनिवार (saturday)। **ऑलिव ऑयल** = जैतून का तेल (olive oil)। **कैस्टर ऑयल** = अरंडी का तेल (castor oil)। **फ़र्क** = अंतर (difference)। **खुराक** = निश्चित मात्रा (dose)। **स्टॉक** = संग्रह, भंडार (stock)। **बुरकना** = चूर्ण जैसी वस्तु का छिड़कना (sprinkle)। **दिलचस्पियाँ** = रुचियाँ

(hobby, liking)। **मनभावनी** = मन को भाने वाली (liking of choice)। **खुशबू** = सुगंध (smell)। **छुटपन** = बचपन (childhood)। **कमतर** = ज्यादा छोटा, लघुतर (smaller)। **हृष्ट-पुष्ट** = तगड़ा, हट्टा-कट्टा (healthy)। **कोलाहल** = शोर, हंगामा, हल्ला (commotion)। **अटपटा** = टेढ़ा, कठिन, ऊट-पटांग (absurd)। **आश्वासन** = भरोसा (assurance)। **खीजना** = झुंझलाना (get angry)। **सहल** = आसान (simple)। **मज़ेदार** = रोचक (tasty, of liking)। **खास** = विशेष (special)। **लय** = सुर (tune)। **स्पीड** = गति (speed)।

सप्रसंग व्याख्या तथा अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर

1. **(पृ. 5)** हाँ, मैं इन दिनों कुछ बड़ा-बड़ा यानि उम्र में सयाना महसूस करने लगी हूँ। शायद इसलिए कि पिछली शताब्दी में पैदा हुई थी। मेरे पहनने-ओढ़ने में भी काफ़ी बदलाव आए हैं। पहले मैं रंग-बिरंगे कपड़े पहनती रही हूँ। नीला-जामुनी-ग्रे-काला-चॉकलेटी। अब मन कुछ ऐसा करता है कि सफ़ेद पहनो। गहरे नहीं, हलके रंग। मैंने पिछले दशकों में तरह-तरह की पोशाकें पहनी हैं। पहले फ्रॉक, फिर निकर-वॉकर, स्कर्ट, लहँगे, गरारे और अब चूड़ीदार और घेरदार कुर्ते।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत भाग-1' में संकलित संस्मरण 'बचपन' से ली गई हैं। इसकी लेखिका 'कृष्णा सोबती' हैं। इसमें लेखिका ने अपने बचपन के पहनावे के बारे में बताया है।

व्याख्या : लेखिका का कहना है कि उम्र के साथ-साथ मैं स्वयं को सयाना महसूस करने लगी हूँ। मेरा जन्म पिछली शताब्दी में हुआ था। समय के साथ-साथ मेरे पहनने-ओढ़ने में भी काफ़ी बदलाव आए हैं। मैं पहले रंग-बिरंगे कपड़े पहनती थी, जैसे-नीले, जामुनी, काले, ग्रे या चॉकलेटी। लेकिन अब उम्र के साथ गहरे रंगों के स्थान पर हलके और सफ़ेद रंग पहनने का मन करता है। रंग ही नहीं मैंने तरह-तरह की पोशाकें भी पहनी हैं। पहले फ्रॉक, फिर निकर-वॉकर, स्कर्ट, लहँगे, गरारे और अब चूड़ीदार और घेरदार कुर्ते। इन सब बातों को देखकर कहा जा सकता है कि समय के साथ-साथ जीवन-शैली में भी बदलाव आता है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर—

(क) पाठ व लेखिका का नाम लिखिए?

उत्तर— पाठ का नाम—बचपन, लेखिका—कृष्णा सोबती।

(ख) लेखिका अब अपने आपको कैसा महसूस करने लगी है?

उत्तर— लेखिका अब अपने आपको सयाना तथा कुछ बड़ा-बड़ा महसूस करने लगी है।

(ग) किस बात से पता चलता है कि लेखिका के मन में रंगों के प्रति बदलाव आया है?

उत्तर— लेखिका को पहले गहरे रंग पसंद थे अब हलके और सफ़ेद रंग पसंद आते हैं। इसे देखकर कहा जा सकता है कि लेखिका के मन में रंगों के प्रति बदलाव आया है।

(घ) लेखिका ने पिछले दशकों में कौन-कौन सी पोशाकें पहनी हैं?

उत्तर— लेखिका ने पिछले दशकों में फ्रॉक, निकर-वॉकर, स्कर्ट, लहँगे, गरारे पहने हैं।

2. **(पृ. 8)** पिछली सदी में तेज़ 'रफ़्तारवाली' गाड़ी वही थी। कभी-कभी हवाई जहाज़ भी देखने को मिलते! दिल्ली में जब भी उनकी आवाज़ आती, बच्चे उन्हें देखने बाहर दौड़ते। दीखता एक भारी-भरकम पक्षी उड़ा जा रहा है पंख फैलाकर। यह देखो और वह गायब! उसकी स्पीड ही इतनी तेज़ लगती। हाँ, गाड़ी के मॉडलवाली दुकान के साथ एक और ऐसी दुकान थी जो मुझे कभी नहीं भूलती। यह वह दुकान थी जहाँ मेरा पहला चश्मा बना था। वहाँ आँखों के डॉक्टर अंग्रेज़ थे।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत भाग-1' में संकलित संस्मरण 'बचपन' से ली गई हैं। इसकी लेखिका 'कृष्णा सोबती' है। इस गद्यांश में उस समय की बात की गई है, जब हवाई जहाज़ कभी-कभी देखने को मिलता था।

व्याख्या : लेखिका का कहना है कि पिछली सदी में आज के समान तेज़ रफ़्तार वाली गाड़ियाँ नहीं थीं। कालका-शिमला में चलने वाली छोटी ट्रेन ही होती थी। कभी-कभी दिल्ली में हवाई जहाज़ देखने का मौका मिल जाता था। जैसे ही आकाश में आवाज़ सुनाई पड़ती बच्चे देखने के लिए बाहर निकल आते थे। दूर से देखने पर हवाई

जहाज़ ऐसा लगता था मानो बहुत बड़ा पक्षी अपने पंख फैलाकर उड़ रहा हो। उसकी गति या रफ़्तार इतनी ज्यादा होती थी कि देखते-देखते ही बादलों में गायब हो जाता था।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर—

(क) पिछली सदी में तेज़ रफ़्तार से दौड़ने वाली गाड़ी कौन-सी थी?

उत्तर— पिछली सदी में तेज़ रफ़्तार से दौड़ने वाली गाड़ी कालका-शिमला ट्रेन थी।

(ख) दिल्ली में किस चीज़ की आवाज़ सुनकर बच्चे घरों से बाहर निकल आते थे?

उत्तर— दिल्ली में हवाई जहाज़ की आवाज़ सुनकर बच्चे घरों से बाहर निकल आते थे।

(ग) उड़ता हुआ हवाई जहाज़ कैसा दिखाई पड़ता है?

उत्तर— उड़ता हुआ हवाई जहाज़ एक भारी-भरकम पक्षी जैसा लगता है।

(घ) शिमला में किस तरह की रेलगाड़ी चलती थी?

उत्तर— शिमला में चलने वाली छोटी ट्रेन ही होती थी।

प्रश्न -अभ्यास

संस्मरण से—

प्रश्न 1. लेखिका बचपन में इतवार की सुबह क्या-क्या काम करती थीं?

उत्तर— लेखिका बचपन में इतवार की सुबह अपने मोज़े धोती थी। अपने जूते पॉलिश करके चमकाती थी।

प्रश्न 2. 'तुम्हें बताऊँगी कि हमारे समय और तुम्हारे समय में कितनी दूरी हो चुकी है।'— इस बात के लिए लेखिका क्या-क्या उदाहरण देती हैं?

उत्तर— लेखिका बताती हैं कि उन दिनों कुछ घरों में ग्रामोफ़ोन थे, रेडियो और टेलीविज़न नहीं थे। उस समय कुलफी होती थी, आज आइसक्रीम हो गई है। कचौरी-समोसा पैटीज़ में बदल गया है। शहतूत, फ़ाल्से और खसखस के शरबत कोक-पेप्सी में बदल गए हैं। उन दिनों कोक के स्थान पर लैम्नेड, विमटो होते थे।

प्रश्न 3. पाठ से पता करके लिखो कि लेखिका को चश्मा क्यों लगाना पड़ा? चश्मा लगाने पर उनके चचेरे भाई उन्हें क्या कहकर चिढ़ाते थे?

उत्तर— लेखिका को चश्मा इसलिए लगाना पड़ा क्योंकि वह दिन की रोशनी को छोड़कर रात को टेबल लैंप में काम करती थी, इससे उसकी नजर कमजोर हो गयी थी। चश्मा लगाने पर उसके चचेरे भाई उसे यह कहकर चिढ़ाते थे।

आँख पर चश्मा लगाया
ताकि सूझे दूर की
यह नहीं लड़की को मालूम
सूरत बनी लंगूर की!

प्रश्न 4. लेखिका अपने बचपन में कौन-कौन सी चीज़ें मज़ा ले-लेकर खाती थीं? उनमें से प्रमुख फलों के नाम लिखो।

उत्तर— लेखिका बचपन में वैंगर्स और डेविको रेस्तराँ की चॉकलेट और पेस्ट्री के साथ ब्राउन ब्रैड मज़े ले-लेकर खाती थीं। वह चॉकलेट-टॉफ़ी का स्टॉक रखती थी। इन्हें रात के खाने के बाद बिस्तर में लेटकर मज़े ले-ले कर खाती थी। शिमला के खट्टे-मीठे काफ़ल लाल, कुछ गुलाबी रसभरी, चैस्टनट आदि उन्हें पसंद थे।

संस्मरण से आगे—

प्रश्न 1. लेखिका के बचपन में हवाई जहाज की आवाज़े, ग्रामोफ़ोन, घुड़सवारी, शोरूम में शिमला-कालका ट्रेन का मॉडल और आश्चर्यजनक आधुनिक चीज़ें थीं। आज कौन-कौन सी आश्चर्यजनक आधुनिक चीज़े तुम्हें आकर्षित करती हैं? उनके नाम लिखो।

उत्तर— आधुनिक युग लेखिका के युग से अलग है। लेखिका के बचपन में ग्रामोफ़ोन, घुड़सवारी, शोरूम में शिमला-कालका ट्रेन का मॉडल और हवाई जहाज़ की आवाज़ें ही आश्चर्यजनक आधुनिक चीज़ें थीं, जो कि आज अति साधारण-सी लगती हैं। आज हमारा युग है कंप्यूटर का। आधुनिक चीज़ें जो हमें सबसे ज्यादा आकर्षित करती हैं वे हैं—कंप्यूटर, मोबाइल, FM रेडियो, नई-नई कार, मोटर साइकिल आदि।

प्रश्न 2. अपने बचपन की कोई मनमोहक घटना को याद करके विस्तार से लिखो।

उत्तर— मुझे अपने पिता जी के साथ हवाई जहाज़ में बैठने का अवसर मिला। उस समय मैं केवल आठ साल की थी। जब मुझे पता चला कि हम दिल्ली से श्रीनगर हवाई जहाज़ में जा रहे हैं, मेरी खुशी की सीमा नहीं थी। निश्चित दिन हम एयरपोर्ट पर पहुँचकर जहाज़ पर सवार हुए। खिड़की से नीचे की ओर देखने पर हर चीज़ छोटी-सी दिखाई पड़ रही थी। जब एयर होस्टस टॉफियाँ लाई तो मैंने अपनी जेब में भर ली। मेरा मन कर रहा था कि इधर से उधर घूमती रहूँ, पर डर लग रहा था। जब जहाज़ नीचे उतरने लगा तो मैंने बैल्ट बाँध ली, पर फिर भी डर लग रहा था। हवाई जहाज़ की पहली यात्रा ही मेरे बचपन की मनमोहक घटना थी।

अनुमान और कल्पना—

प्रश्न 1. सन् 1935-40 के लगभग लेखिका का बचपन शिमला में अधिक दिन गुजरा। उन दिनों के शिमला के विषय में जानने का प्रयास करो।

उत्तर— उन दिनों शिमला इतना अधिक विकसित नहीं था, जितना कि आज है। सड़कों पर पर्यटकों की संख्या भी कम हुआ करती थी। अधिक भीड़-भाड़ दिखाई नहीं देती थी। वैसे यह एक प्रसिद्ध पहाड़ी स्थल माना जाता था। आने-जाने के साधन भी बहुत अधिक नहीं थे। वहाँ पर इतने अधिक होटल इत्यादि भी नहीं थे, जितने कि आज हो गए हैं।

प्रश्न 2. लेखिका ने इस संस्मरण में सरवर के माध्यम से अपनी बात बताने की कोशिश की है, लेकिन सरवर का कोई परिचय नहीं दिया गया है। अनुमान करके बताओ कि सरवर कौन हो सकता है?

उत्तर— लेखिका ने इस संस्मरण में सरवर के माध्यम से अपनी बात बताने की कोशिश की है लेकिन सरवर का कोई परिचय नहीं दिया गया है। हमारे अनुमान से सरवर पोता हो सकता है क्योंकि लेखिका ने पाठ में एक स्थान पर कहा है कि मैं तुम्हारी दादी या नानी भी हों सकती हूँ। हमारे समय और तुम्हारे समय में कितना अंतर आ चुका है।

भाषा की बात—

प्रश्न 1. क्रियाओं से भी भाववाचक संज्ञाएँ बनती है। जैसे मारना से *मार*, काटना से *काट*, हारना से *हार*, सीखना से *सीख*, पलटना से *पलट* और हड़पना से *हड़प* आदि भाववाचक संज्ञाएँ बनी हैं। तुम भी इस संस्मरण से कुछ क्रियाओं को छाँटकर लिखो और उनसे भाववाचक संज्ञा बनाओ।

उत्तर—

क्रिया शब्द	भाववाचक संज्ञा	क्रिया शब्द	भाववाचक संज्ञा	क्रिया शब्द	भाववाचक संज्ञा
खेलना	खेल	चढ़ना	चढ़ाई	लगना	लगाव
चलना	चाल	उतरना	उतार	खरीदना	खरीद

प्रश्न 2. *चार* दिन, *कुछ* व्यक्ति, *एक लीटर* दूध आदि शब्दों के प्रयोग पर ध्यान दो तो पता चलेगा कि इसमें *चार*, *कुछ* और *एक लीटर* शब्द से संख्या या परिमाण का आभास होता है, क्योंकि ये संख्यावाचक विशेषण है। इसमें भी *चार* दिन से निश्चित संख्या का बोध होता है, इसलिए इसको निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं और *कुछ* व्यक्ति से अनिश्चित संख्या का बोध होने से इसे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। इसी प्रकार *एक लीटर* दूध से परिमाण का बोध होता है इसलिए इसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

• अब तुम नीचे लिखे वाक्यों को पढ़ो और उनके सामने विशेषण के भेदों को लिखो—

उत्तर— (क) मुझे दो दर्जन केले चाहिए। (निश्चित संख्यावाचक)

(ख) दो किलो अनाज दे दो। (निश्चित परिमाणवाचक)

(ग) कुछ बच्चे आ रहे हैं। (अनिश्चित संख्यावाचक)

(घ) सभी लोग हँस रहे थे। (अनिश्चित संख्यावाचक)

(ङ) तुम्हारा नाम बहुत सुंदर है। (अनिश्चित संख्यावाचक)

प्रश्न 3. कपड़ों में मेरी दिलचस्पियाँ मेरी मौसी जानती थीं।

इस वाक्य में रेखांकित शब्द 'दिलचस्पियाँ' और 'मौसी' संज्ञाओं की विशेषता बता रहे हैं, इसलिए ये सार्वनामिक विशेषण हैं। संज्ञा शब्द से पहले अगर सर्वनाम आता है तो वह सार्वनामिक विशेषण कहलाता है। पाठ में से ऐसे पाँच उदाहरण छाँटकर लिखो।

उत्तर— (क) हम बच्चे इतवार की सुबह इसी में लगाते। (ग) वह दुकान थी जहाँ मेरा पहला चश्मा बना था।

(ख) हमारा घर माल से ज्यादा दूर नहीं था। (घ) कुछ बच्चे पुड़िया पर तेज़ मसाला बुरकवाते।

(ङ) मैं डॉक्टर साहिब का कहा दोहरा देती।

कुछ करने को—

1. अगर तुम्हें अपनी पोशाक बनाने को कहा जाए तो कैसी पोशाक बनाओगे और पोशाक बनाते समय किन बातों का ध्यान रखोगे ? अपनी कल्पना से पोशाक का डिज़ाइन बनाओ।

उत्तर— विद्यार्थी स्वयं करें।

2. तीन-तीन के समूह में अपने साथियों के साथ कपड़ों के नमूने इकट्ठा करके कक्षा में बताओ। इन नमूनों को छूकर देखो और अंतर महसूस करो। यह भी पता करो कि कौन-सा कपड़ा किस मौसम में पहनने के लिए अनुकूल है।

उत्तर— विद्यार्थी स्वयं करें।

3. हथकरघा और मिल के कपड़े बनाने के तरीकों के बारे में पता करो। संभव हो तो किसी कपड़े के कारखाने में जाकर भी जानकारी इकट्ठी करो।

उत्तर— विद्यार्थी स्वयं करें।

4. हमारे देश में तरह-तरह के भोजन, तरह-तरह की पोशाकें प्रचलित हैं। कक्षा के बच्चे और शिक्षक इनके विविध रूपों के बारे में बातचीत करें।

उत्तर— विद्यार्थी स्वयं करें।

परीक्षोपयोगी अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर—

प्रश्न 1. लेखिका कितनी उम्र की होगी ?

उत्तर— लेखिका हमारी दादी, नानी की उम्र की होगी।

प्रश्न 2. बचपन के कुछ फ्रॉकों के बारे में बताओ ?

उत्तर— बचपन के कुछ फ्रॉकों में से एक था हल्की नीली और पीली धारीवाला फ्रॉक जिसके गोल कॉलर और बाजू पर भी गोल कफ़ था। दूसरा हलके गुलाबी रंग का बारीक चुन्नटों वाला घेरदार फ्रॉक, जिसके नीचे गुलाबी रंग की फ्रिल लगी हुई थी। तीसरा लैमन कलर का बड़े प्लेटों वाला गर्म फ्रॉक जिसके नीचे फ़र टँकी थी।

प्रश्न 3. शनीचर की सुबह ही नाक में किसकी गंध आने लगती थी ?

उत्तर— शनीचर की सुबह ही ऑलिव ऑयल या कैस्टर ऑयल की गंध आने लगती थी।

प्रश्न 4. शिमला-कालका ट्रेन का मॉडल कहाँ रखा हुआ था ?

उत्तर— स्कैंडल प्वाइंट के ठीक सामने उन दिनों एक दुकान हुआ करती थी, जिसके शोरूम में शिमला-कालका ट्रेन का मॉडल रखा हुआ था।

प्रश्न 5. लेखिका को अब चश्मा लगाना कैसा लगता है ?

उत्तर— शुरू में जब चश्मा लगा तब लेखिका को अच्छा नहीं लगता था लेकिन अब यह तो चेहरे के साथ घुल-मिल गया है। बिना चश्मे के चेहरा खाली-खाली सा लगने लगता था।

प्रश्न 6. लेखिका को परिवार के लोग किस नाम से पुकारते थे?

उत्तर— परिवार के लोग लेखिका को जीजी के नाम से पुकारते थे।

निबंधात्मक प्रश्नोत्तर—

प्रश्न 1. उम्र बढ़ने के साथ-साथ लेखिका में क्या-क्या बदलाव हुए हैं? पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर— उम्र बढ़ने के साथ-साथ लेखिका के पहनने-ओढ़ने में भी काफ़ी बदलाव आए। पहले वह रंग-बिरंगे कपड़े पहनती थी जैसे नीला-जामुनी, ग्रे, काला, चॉकलेटी आदि। लेकिन अब सफ़ेद और हल्के रंग पसंद करती हैं। पिछले दशकों में तरह-तरह की पोशाकों में भी बदलाव आया। पहले फ्रॉक, निकर-वॉकर, स्कर्ट, लहँगे, गरारे तो अब चूड़ीदार और घेरदार कुर्ते पहनती है।

प्रश्न 2. लेखिका की तरह तुम्हारी उम्र बढ़ने से तुम्हारे पहनने-ओढ़ने में क्या-क्या बदलाव आए? विस्तार से बताइए।

उत्तर— लेखिका की तरह हमारी उम्र बढ़ने से हमारे पहनने-ओढ़ने में भी बदलाव आया है। बचपन में पहने जाने वाले फ्रॉक, ट्यूनिक और छोटी स्कर्ट के स्थान पर जींस, टॉप और लंबे स्कर्ट पहनने शुरू कर दिए। रंगों में भी थोड़ा परिवर्तन हुआ है।

प्रश्न 3. कल्पना करो कि तुम अपने माता-पिता के समान बड़े हो गए हो तो अनुमान करके बताओ कि तुम्हारे पहनने-ओढ़ने में क्या-क्या, बदलाव हो सकता है और क्यों? इसे अपने दोस्तों को सुनाओ।

उत्तर— यदि हम अपने आपको माता-पिता के समान बड़ा मानते हैं तो समय और उम्र के साथ हमारे पहनने-ओढ़ने में भी बदलाव आएगा। हम अपनी माता के समान सूट, साड़ी व लहँगे आदि पहनेंगे। पहले पहने जाने वाली पोशाक जैसे जींस, स्कर्ट आदि छोड़ देंगे। ऐसी पोशाक पहनेगें जिसमें बड़प्पन दिखाई दे।

प्रश्न 4. लेखिका ने शिमला रिज पर जो मजे किए थे, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए?

उत्तर— लेखिका ने शिमला रिज पर बड़े मजे किए थे। वहाँ उसने घोड़ों की सवारी की थी। वह उन घोड़ों को बहुत छोटा समझती थी तथा उन पर बहुत हँसती थी। उसके ननिहाल के घोड़े बहुत हष्ट-पुष्ट थे, शाम के समय सारा वातावरण गुब्बारों से भरा दिखाई देता था। सामने जाखू का पहाड़ दिखाई देता था। साथ ही चर्च था, चर्च की घंटियों की आवाज दूर-दूर तक सुनाई देता थी।

• बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर—

1. 'बचपन' संस्मरण की लेखिका कौन हैं?—
(क) सुंदरा रामस्वामी (ग) कृष्णा सोबती
(ख) हेलेन केलर (घ) सुभद्रा कुमारी चौहान

2. लेखिका ने पाठ में अपनी किस उम्र का वर्णन किया है—
(क) बचपन (ग) वृद्धावस्था
(ख) जवानी (घ) प्रौढ़ावस्था

3. लेखिका कब पैदा हुई थी—
(क) पिछले दिन (ग) पिछले वर्ष
(ख) पिछले माह (घ) पिछली शताब्दी

4. लेखिका बचपन में कैसे कपड़े पहनती थी—
(क) काले-पीले (ग) सफेद-रंग वाले
(ख) रंग-बिरंगे (घ) हल्के रंग वाले

5. लेखिका विशेष रूप से किस कपड़े को याद करती है—
(क) लहंगे को (ग) फ्रॉक को
(ख) निक्कर को (घ) स्कर्ट को

6. लेखिका को बचपन में खुद क्या धोने पड़ते थे—
(क) कपड़े (ग) फ्रॉक को
(ख) मोज़े (घ) स्कर्ट को

7. बचपन में पैरों में छाले क्यों पड़ जाते थे—
(क) पैदल चलने से (ग) नए जूते पहनने से
(ख) चढ़ाई करने से (घ) चोट लगने से

8. प्रस्तुत पाठ में किस बच्चे का नाम लिया गया है—
(क) सरबर (ग) सरसर
(ख) सरबत (घ) सरवर

उत्तर— 1. (ग), 2. (क), 3. (घ), 4. (ख), 5. (ग), 6. (ख), 7. (ग), 8. (घ)।